अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुञ्ज, हरिद्वार

माता भगवती स्मृति उपवन

कार्य योजना

"माता भगवती स्मृति उपवन" नगरों के सार्वजनिक स्थलों अथवा उद्यानों के लिए यह एक बहुत ही उपयोगी सेवा का रचनात्मक प्रकल्प है। इसके द्वारा मानव समाज को उत्तम स्वास्थ्य, पर्यावरण का संवर्धन और प्रकल्प को संचालित करने वाले व्यक्ति/संस्था को स्वावलम्बन प्राप्त होता है।

आज शहर-नगरों में प्रातः / सायंकाल भ्रमण के लिए दूर या यातायात भरी सड़कों पर जाना पड़ता है, फिर भी शुद्ध स्वास्थ्यवर्धक वायु नहीं मिलती है। उपवन के एक्यू पथ पर भ्रमण से व्यक्ति का प्राकृतिक रूप से उपचार होता है व जीवन निरोग बनता है। पथ के साथ लगी आयुर्वेदिक औषधियों से आरोग्यवर्धक प्राणवायु प्राप्त होती है।

पथ के मध्य स्थापित वृक्ष समूह – नक्षत्र राशि- नवग्रह वृक्ष मण्डल, वास्तु वृक्ष मण्डल, पंचवटी, त्रिवेणी, हरिशंकर, देववृक्ष, तुलसी, कल्पवृक्ष, यज्ञशाला आदि की परिक्रमा से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है, जिससे जीवन सुखी एवं समृद्ध होता है।

प्राकृतिक आहार के रूप में प्रतिदिन ताजे स्वास्थ्यवर्धक प्राकृतिक पेय- जवारा, आँवला, एलोवेरा, लौकी, करेला, पालक, टमाटर, गाजर आदि रस एवं नींबू, शहद-नींबू पानी और अंकुरित आहार सेवन के कारण प्राकृतिक रूप से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। माता भगवती स्मृति उपवन को शहर, नगर, कालोनी के मध्य सार्वजनिक स्थल या निजी उद्यानों को गोद लेकर या भूमि खरीद कर विकसित करें। इसका संचालन व्यक्ति या संस्था स्तर पर किया जा सकता है।

स्मृति उपवन एक परम पुण्य कार्य

इस उपवन की स्थापना शहर, नगर, गाँवों में अनुपयोगी सार्वजनिक भूमि को हरा-भरा करने, पर्यावरण संवर्धन, भूमि-जलसंरक्षण, प्रकृति-सन्तुलन एवं ग्लोबल वार्मिंग रोकने हेतु बहुत ही उपयोगी सेवाकार्य है। साथ ही समाज में व्यक्ति की स्मृतियों, जन्मदिवस, विवाहदिवस, पुण्यतिथि आदि को चिरस्थायी बनाये रखने के लिये वृक्षारोपण का एक पुण्य कार्य भी है।

उपलब्धियाँ एवं लाभ

स्वास्थ्य संरक्षण, सकारात्मक ऊर्जा, श्रम का उपयोग, धन की बचत, राष्ट्रसेवा। पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन, भूमि-जल संरक्षण, पक्षियों के लिये आश्रय, जन्मदिवस, विवाहदिवस, पुण्य तिथि आदि स्मृतियों

का चिरस्थायी स्थल है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह एक बहुत ही उपयोगी प्रकल्प है। इसके अतिरिक्त घरों में जहाँ वाटिका हेतु भूमि न हो, वहाँ भी गमलों में मसाला वाटिका, स्वास्थ्यवर्धक जड़ी-बूटियाँ, तुलसी, दिव्य वृक्ष, वास्तु-मण्डल, शाक-सब्जियाँ आदि लगायें, इससे स्वास्थ्य, स्वावलम्बन एवं सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त हो।

पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएँ, रसायन आधारित कृषि, मिलावट और अस्त-व्यस्त दिनचर्या के कारण दिनोंदिन मनुष्य और बीमार और कमजोर हो रहा है। अतः आए दिन होने वाले रोगों के उपचार हेतु निम्नलिखित औषधीय पौधों को गमलों में उगाना; ताकि घरेलू स्तर पर सामान्य रोगों से स्वास्थ्य रक्षा की जा सके। ये पौधे औषधि के रूप मे उपयोगी होने के अतिरिक्त घर- आँगन की सुंदरता भी प्रदान करते हैं।

स्मृति उपवन हेतु उपयोगी वनस्पतियाँ

माता भगवती स्मृति उपवन में बड़े औषधीय वृक्षों के साथ-साथ तुलसी, घृतकुमारी, हल्दी, अड़ूसा, अदरक, अनार, अमृता, अपामार्ग, आक, भृंगराज, अतिबल, अन्तमूल, पुदीना, अमरूद, कण्टकारी, कासमद, गुड़हल, गोक्षुर, दुग्धिका, नील शंखपुष्पी, बड़ी लोणा, भुई, मोगरा,चक्रमर्द, अश्वगंधा, कचनार, कालीमिर्च, गुड़हल, नींबू, हरड़, बहेड़ा, आँवला, अर्जुन, बेल, नीम, पत्थरचूर, विधारा आदि जड़ी बूटियों के अतिरिक्त वास्तु वृक्ष मण्डल, मसाला वाटिका, शाक वाटिका, तुलसी वाटिका – श्याम/रामा तुलसी आदि भी लगाये जा सकते हैं। स्थान की उपलब्धता के आधार पर उपवाटिका के रूप में निम्न वाटिकाएँ भी साथ ही लगायी जा सकती हैं।

उपवन के घटक

उपयोगी वृक्ष, एक्यूप्रेशर पथ, वनौषधियाँ, पिरामिड, यज्ञशाला, नक्षत्र वाटिका, राशि वाटिका, नवग्रह वाटिका, वास्तु मण्डल वाटिका, देववृक्ष, कल्प वृक्ष, हरिशंकरी , त्रिवेणी, त्रिदेव, पक्षी विहार, जवारा वाटिका, , ध्यान-प्राणायाम स्थल, वनौषधीय वाटिका, प्राकृतिक आहार केंद्र आदि।

नक्षत्र वाटिका

नक्षत्र वाटिका सम्बन्धी वृक्ष-वनस्पतियाँ

अश्विनी-कुचिला, भरणी-आँवला, कृतिका-गूलर, रोहिणी-जामुन, मृगशिरा-खैर, आर्द्रा-शीशम, पुनर्वसु-बाँस, पुष्य-पीपल, आश्लेषा-नागकेसर, मघा-बरगद, पूर्वाफाल्गुनी-पलाश, उत्तराफाल्गुनी-पाकड़, हस्त-रीठा/चमेली, चित्रा-बेल, स्वाति-अर्जुन, विशाखा-कटाई, अनुराधा-मौलश्री, ज्येष्ठा-चीड/सेमल, मूल-

साल, पूर्वाषाढ़ा-जामुन, उत्तराषाढ़ा-कटहल, श्रवण-शमी, धनिष्ठा-मदार, शतभिषा-कदम्ब, पूर्वाभाद्रपद-आम, उत्तराभाद्रपद-नीम, रेवती-महुआ।

राशि वाटिका

राशि वाटिका सम्बन्धी वृक्ष-वनस्पतियाँ

मेष-खैर, वृषभ-गूलर, मिथुन-अपामार्ग, कर्क-पलाश, सिंह-मदार, कन्या-दूर्वा, तुला-गूलर, वृश्चिक-खैर, धनु-पीपल, मकर-शमी, कुम्भ-शमी, मीन-कुश।

नवग्रह वाटिका

नवग्रह वाटिका सम्बन्धी वृक्ष-वनस्पतियाँ

सूर्य-आक, चन्द्र-पलाश, मंगल-खैर, बुध-अपामार्ग, बृहस्पति-पीपल, शुक्र-गूलर, शनि-शमी, राहु-दूर्वा, केतु-कुश।

वास्तुमण्डल वाटिका

वास्तुमण्डल वाटिका सम्बन्धी वृक्ष-वनस्पतियाँ

उत्तर-बेल, ईशान-आँवला, पूर्व-बरगद, आग्नेय-अनार, दक्षिण-गूलर, नैऋत्य-कचनार, पश्चिम पीपल, वायव्य-नीम, केन्द्र मे तुलसी ।

भूमि कैसे प्राप्त करें –

शासकीय भूमि प्राप्ति के लिये अपने यहाँ के नगर पंचायत अध्यक्ष / नगर पालिका अध्यक्ष / नगर निगम अध्यक्ष /तहसीलदार आदि को अपनी योजना बनाकर आवेदन दिया जा सकता है व निजी भूमि हो, तो भूमि मालिक को योजना समझाकर इस हेतु तैयार किया जा सकता है।

आवेदन को बनाते समय यह ध्यान रखा जाये कि योजना भूमि स्वामित्व के अधिकार की न होकर भूमि गोद लेकर आमजन के स्वास्थ्य संवर्द्धन व पर्यावरण सुधार के लिये विकसित की जानी परिलक्षित हो। योजना में शासन, जनभागीदारी एवं गायत्री परिवार के आपसी सहयोग से रचनात्मक कार्य की बात उल्लेखित की जा सकती है।

नोट – आवेदन का प्रारूप संलग्न है।

साधन कैसे एकत्रित करें –

स्मृति उपवन विकास के लिये धन राशि व साधन स्थानीय शासन / प्रशासन व जन सहयोग से प्राप्त किये जा सकते हैं। शासन से सहयोग के लिये अपनी पूरी कार्य योजना संबंधित अधिकारी/विभाग को प्रस्तुत करें। प्रत्येक जिले में जन भागीदारी, बगीचा विकास, नगर सौन्दर्यीकरण, प्रदूषण मुक्ति इत्यादि मद होते हैं, इनसे उपवन विकास हेतु राशि स्वीकृत कराई जा सकती है। चूंकि यह कार्य चेरिटेबल कार्यों के अन्तर्गत आता है, अतः दानदाताओं से सहयोग एकत्रित करने के लिये अपनी योजना और इससे आमजन को क्या-क्या लाभ मिलेगा, इस आशय का पत्रक छपवाकर वितरित कर सहयोग एकत्रित कर सकते हैं। प्रियजनों की स्मृति में, जन्म दिवस, विवाह दिवस इत्यादी अवसरों पर भी कुछ न कुछ सहयोग लिया जा सकता है और योजना को धरि-धीरे आगे विकास के पथ पर बढ़ाया जा सकता है।

विकास के चरण –

सर्वप्रथम भूमि / बगीचा प्राप्ति के बाद भूमि पूजन कर फैन्सींग करायी जाये, गेट लगाया जाये, पानी की व्यवस्था की जाये, मिट्टी कम हो तो डालकर लेवलिंग इत्यादि कार्य किये जाएं।

इसे बनाने के लिये आपके पास जितनी भी भूमि उपलब्ध है उसी के अनुसार इसका प्लान किया जा सकता है और इसके घटकों को कम या ज्यादा किया जा सकता है या घटकों का एरिया (क्षेत्रफल) कम या ज्यादा किया जा सकता है। लगाये जाने वाले वृक्षों, औषधीय पौधों की संख्या कम या ज्यादा की जा सकती है।

इसका संचालन कैसे करें –

इसके संचालन हेतु एक पूर्णकालिक परिजन की नियुक्ति आवश्यक है जो इसकी पूरी संचालन व्यवस्था को देखे। स्मृति उपवन की विशेषताओं का पत्रक छापकर घरों, दुकानों, ऑफिसों में वितरीत कराऐं

व पूछने वालों को संपूर्ण जानकारी बताएं। इसे खोलने का निश्चित समय प्रातः 5 बजे से 9 बजे तक व संध्या 5 बजे से 8 बजे तक रखा जाये। जब गार्डन खोला जाये तब गायत्री मन्त्र व महामृत्युंजय मन्त्र को बजाया जाये, जिससे आने वालों को शब्द शक्ति का लाभ प्राप्त होगा और उनका मन एकाग्र होकर दिव्यता धारण करेगा। स्मृति उपवन का संचालन कुशलता से करने हेतु इसका स्वावलंबी होना अत्यंत आवश्यक है, अतः गॉर्डन पर स्वास्थ्यवर्द्धक पेय, अंकुरित आहार, सभी प्रकार के दलिये आदि की व्यवस्था न्यूनतम मूल्य पर करनी होगी। आने वालों को स्वास्थ्य संवर्द्धक पेय व आहार प्राप्त होगा और हमारी संस्था स्वावलम्बी बनेगी। इस आय से हमारे केन्द्र का कुशलता पूर्वक संचालन हो सकेगा।

<u>आवेदन प्रारूप</u>

श्रीमान, अध्यक्ष नगर पंचायत/अध्यक्ष नगर पालिका/अध्यक्ष नगर निगम / तहसीलदार सा./जिलाधीश महोदय।

<u>विषयः</u>-..... भूमि पर/बगीचे को माता भगवती स्मृति उपवन विकसित करने हेतु।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि गायत्री परिवार एक सामाजिक संस्था है, जो समाज उत्थान व राष्ट्र निर्माण में पूर्ण तत्परता से संलग्न है। जिसके द्वारा जनहित के रचनात्मक कार्य पूरे देश में संचालित है। संस्था द्वारा अपने नगर में एक माता भगवती स्मृति उपवन के विकास करने का निर्णय लिया गया है। इसके माध्यम से हमारे यहां पर्यावरण के सुधार के साथ इस हेतु आमजन में जागरूकता विकसित होगी और इस क्षेत्र में कार्य करने वालों को प्रेरणा मिलेगी, साथ ही यहाँ आने वालों को स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। इस स्मृति उपवन में हर्बल औषधीय पौधों का प्रदर्शन, राशि-नवग्रह-नक्षत्र पौध वाटिका, घूमने हेतु एक्यूप्रेशर पाथ (जिससे एक्यूप्रेशर चिकित्सा का लाभ मिलेगा), पिरामिड ध्यान केन्द्र आदि होंगे। यह एक संपूर्ण पर्यावरण संरक्षण एवं स्वास्थ्य केन्द्र होगा, जिसका लाभ नगर के आमजन ले सकेंगे।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये हमें .....बगीचा/..... खसरा नं भूमि संस्था आप स्वामित्व या गोद देकर प्रदान करने की कृपा करें, जिससे हम इस जनहित योजना को विकसित कर इसका लाभ सभी को दे सकें।

निवेदक

अखिल विश्व गायत्री परिवार

शाखा .....